हिन्दुस्तान, वाराणसी, पृ० सं० 6
दिनांक: 5-6-19

प्रदूषण नियंत्रण व पर्यावरण संरक्षण में डीरेका नजीर

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

प्रदूषण नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण में अन्य औद्योगिक इकाइयों को डीरेका प्रबंधन से सीखने की जरूरत है। यहां इस दिशा में अनेक कार्य हुए हैं, कई कार्य प्रक्रिया में हैं। कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए डीरेका में इस सत्र से भारतीय रेलवे के लिए डीजल रेल इंजन का उत्पादन बंद कर दिया गया है, अब केवल विद्युत रेल इंजन बनाये जाएंगे।

दूसरी ओर परिसर में शोध संयंत्र के जरिये प्रदूषण पर रोकथाम की गयी है। सीवेज के पानी के शोधन के लिए एसटीपी और कारखाने से निकलने वाले गंदे तेल व कचरे के शोधन के लिए औद्योगिक निस्राव शोधन संयंत्र लगा है। एसटीपी से शोधित जल का इस्तेमाल बागवानी में किया जा रहा है। 0.25 मिलियन लीटर जल शोधन की क्षमता के दो अन्य पुनः प्रयोगी जल शोधन संयंत्र लगाये जाने हैं। इससे पानी पीने योग्य हो जायेगा। यहां 1.86 मेगावाट का सोलर पावर प्लांट स्थापित किया गया है। दो मेगवाट का अतिरिक्त प्लांट लगाया जाना है। ऊर्जा बचाने के लिए परिसर व आवासों में एलईडी लाइट का इस्तेमाल हो रहा है। भूमिगत जल को रिचार्ज करने के लिए 425 सोकपिट और 47 डीप रीचार्ज वेल बनाये गये हैं। परिसर में डेढ़ लाख पेड़-पौधे हैं, 40 फीसदी हिस्सा हरा-भरा है। वर्ष 2001 में ही पर्यावरण प्रबंधन के लिए आईएसओ प्रमाणपत्र मिल चुका है।

रश्मि गोयल, जीएम, डीएलडब्ल्यू।

सराहनीय

- विद्युत रेल इंजन का उत्पादन कार्बन उत्सर्जन कम करने में सहायक
- मल-जल शोधन संयंत्र, बारिश के पानी के संरक्षण पर विशेष कार्य

Scanned by CamScanner

जनवार्ता, वाराणसी, पृ० सं० 3
दिनांक: 5.6.19

डीरेका विश्व के डीजल रेल इंजन निर्माताओं में अव्वल

पर्यावरण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण मुकाम हासिल किया, स्वच्छ डीरेका-हरित डीरेका-का दृश्य

रश्मि गोयल, महाप्रबंधक

वाराणसी (जनवार्ता)। स्व. लाल बहादुर शास्त्री द्वारा तीन जनवरी, 1964 को डीजल रेल इंजन कारखाना (डीरेका) निर्मित प्रथम डीजल-विद्युत रेल इंजन को राष्ट्र को समर्पित करने के साथ अपनी शुरूआत करने वाले डीरेका ने वर्तमान में विश्व के अग्रणी डीजल रेल इंजन निर्माताओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। डीरेका इस समय विश्व का दूसरा सबसे बड़ा डीजल विद्युत रेल इंजन निर्माता है।

विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय रेल प्रणालियों द्वारा प्रयोग किये जा रहे मल्टी-गेज के रेल इंजन बनाने में सक्षम डीरेका ने एशिया और अफ्रीका में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। डीरेका द्वारा निर्मित रेल इंजन बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, तंजानिया, सूडान, सेनेगल, माली, मलेशिया, वियतनाम, अंगोला और मोजाम्बिक में दौड़ रहे हैं। अपने देश में भारतीय रेल के लिए मोटिव पावर प्रदाता होने के साथ-साथ डीरेका विभिन्न स्टील प्लांटों, पावर प्लांटों और पोर्ट ट्रस्टों को भी रेल इंजनों की आपूर्ति कर रहा है। डीरेका ने डब्ल्यूएपी -7 कोटि के विद्युत लोकोमोटिव का उत्पादन प्रारम्भ कर दिया है। लोको संख्या 30509 -वरुणा, को कोचिंग सेवा के लिए दिनांक 14.02.2017 को निर्गमित कर दिया गया है। वर्ष 2016-17 में डीरेका ने विद्युत रेल इंजन निर्माण की यात्रा शुरू की और तब से पीछे मुड़कर नहीं देखा। कार्बन फुटप्रिंट कम करने एवं पर्यावरण के अनुकूल ट्रेक्शन उपलब्ध कराने की दृष्टि से डीरेका अब भारतीय रेल के लिए डीजल रेल इंजन का निर्माण नहीं करेगा। वित्त वर्ष 2018-19 में 145 विद्युत लोको का निर्माण सफलता पूर्वक किया गया एवं इन्हें राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया। विश्व इतिहास में पहली बार चार डीजल लोकोमोटिव को उच्च कर्षण शक्ति वाले विद्युत लोकोमोटिव में परिवर्तित कर राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया। इस तरह के पहले ट्रिवन लोको का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करकमलों द्वारा 19 फरवरी को किया गया। काशी में स्थित होने के साथ ही डीरेका इस क्षेत्र की एक अग्रणी औद्योगिक इकाई है, जो अपनी सामुदायिक साझेदारी के साथ-साथ पवित्र गंगा नदी की स्वच्छता के लिए भी जागरूक है। **मल जल शोधन संयंत्र औद्योगिक निस्राव शोधन संयंत्र** उक्त संयंत्रों ने गंगा निर्मलीकरण योजना में सहयोग करने के साथ ही संसाधनों की

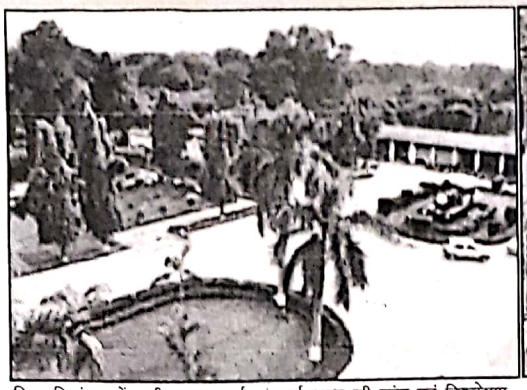

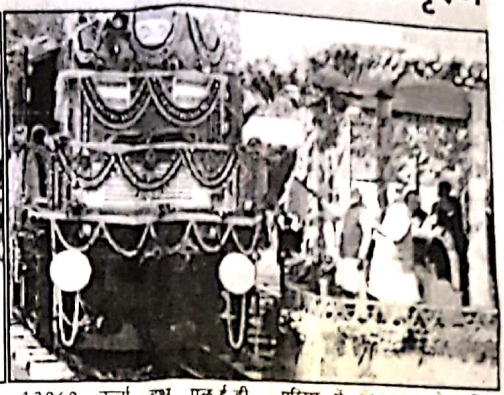

रिसाइक्लिंग में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एस.टी.पी. में प्रतिदिन लगभग 3 मिलियन लीटर जल का शोधन किया जाता है। शोधित जल को कृषि कार्य एवं बागवानी के उपयोग में लाया जाता है। डीरेका स्वच्छ पर्यावरण के प्रति अपने प्रयासों के लिए प्रतिबद्ध है। पुनःप्रयोगी जल शोधन संयंत्र लगाकर डीरेका ने एक उल्लेखनीय कार्य किया है। पुनः प्रयोग के लिए प्रतिदिन 0.25 मिलियन लीटर जल शोधन की क्षमता वाले 02 पुनःप्रयोगी जल शोधन संयंत्र लगाने हेतु डीरेका प्रक्रियारत है। पुनःप्रयोगी जल के पीने योग्य पानी की तरह ही निर्मल होने का दावा किया जाता है।टिकाऊ जल प्रबंधन के अंतर्गत पुनःप्रयोगी जल का उपयोग मानव गतिविधियों के लिए वैकल्पिक जल श्रोत के रूप में बना रहेगा। प्रचलित एनर्जी ऑडिट, ऊर्जा खपत की जांच एवं विश्लेषण के अतिरिक्त डीरेका में ऊर्जा की खपत को कम करने के दृष्टिकोण से ऊर्जा दक्षता में सुधार हेतु उपायों की भी संस्तुति करेगा। **डीरेका परिसर में सौर ऊर्जा उपकरण-** ऊर्जा संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाते हुए, गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों के लाभों को प्राप्त करने हेतु डीरेका ने ग्रिड कनेक्टेड सोलर पॉवर पैनल की स्थापना की तरफ महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। वर्तमान में डीरेका ने विभिन्न स्थानों पर 1.86 मेगावॉट पावर के ग्रिड कनेक्टेड सोलर पॉवर संयंत्र स्थापित किये हैं। वर्ष 2017-18 के दौरान 1.86 मेगावॉट स्थापित किया जा चुका है और वर्तमान वित्तीय वर्ष में 2 मेगावॉट अतिरिक्त क्षमता का संस्थापन प्रक्रियाधीन है। वर्ष 2017-18 तक डीरेका के आवासों एवं सेवा भवनों में 12060 ऊर्जा दक्ष एल.ई.डी. उपकरण लगाए गए हैं। डीरेका ऐसी पहली उत्पादन इकाई है, जहां ऊर्जा खपत एवं अनुकूल ऊर्जा प्रयोग की निगरानी के लिए स्काडा (एस.सी.ए.डी.ए.) प्रणाली को सामान्य सेवाओं के रूप में स्थापित किया गया है। उल्लेखनीय है कि डीरेका को उत्कृष्ट ऊर्जा संरक्षण के लिए आई.एस.ओ.:50001 प्रमाणन प्राप्त है। डीरेका अपने रेल इंजनों में भी हरित ऊर्जा का प्रयोग कर रहा है। ऑग्जिलरी पॉवर यूनिट (ए.पी.यू.) एवं होटल लोड फीचर्स ने डीजल की खपत को कम किया है, फलस्वरूप मौजूदा उत्सर्जन में अत्यधिक कमी आई है। इलेक्ट्रॉनिक फ्यूल इंजेक्शन सिस्टम के प्रयोग से भी डीजल रेल इंजनों का उत्सर्जन कम होगा और इसके द्वारा कार्बन फुट प्रिंट में कमी आएगी। वर्तमान में डीरेका परिसर में 150000 से अधिक छोटे एवं बड़े वृक्ष हैं, जिससे डीरेका में लगभग 40% क्षेत्र हरा-भरा दृष्टिगोचर होता है। सम्पूर्ण परिसर में प्रतिवर्ष हजारों वृक्षों का रोपण किया जाता है। वर्ष 2018-19 में डीरेका में 5200 से अधिक वृक्ष लगाये गए। 'स्वच्छ डीरेका, हरित डीरेका' हेतु 'टीम डीरेका' के तत्संबंधी प्रयासों के फलस्वरूप यहां का वातावरण चहुंओर न केवल हरा-भरा है। डीरेका की उपलब्धियों में एक और महत्वपूर्ण कड़ी उस समय जुड़ गई, जब सी.आई.आई.-गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर (सी.आई.आई.-गोदरेज जी.बी.सी.) ने डीरेका को पर्यावरण संरक्षण के लिए ग्रीन-को सिल्वर का दर्जा प्रदान किया। उपर्युक्त तथ्यों से विदित है कि डीरेका स्वच्छ, हरित एवं सतत पर्यावरण के प्रति समर्पित है।

राष्ट्रीय सहारा, वाराणसी, पृ० सं० 2
दिनांक: 5-6-19

स्वच्छ डीरेका-हरित डीरेका

स्व. लाल बहादुर शास्त्री द्वारा 03 जनवरी, 1964 को डीजल रेल इंजन कारखाना (डीरेका) निर्मित प्रथम डीजल-विद्युत रेल इंजन को राष्ट्र को समर्पित करने के साथ अपनी शुरूआत करने वाले डीरेका ने वर्तमान में विश्व के अग्रणी डीजल रेल इंजन निर्माताओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। डीरेका इस समय विश्व का दूसरा सबसे बड़ा डीजल विद्युत रेल इंजन निर्माता है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय रेल प्रणालियों द्वारा प्रयोग किये जा रहे मल्टी-गेज के रेल इंजन बनाने में सक्षम डीरेका ने एशिया और अफ्रीका में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। डीरेका द्वारा निर्मित रेल इंजन बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, तंजानिया, सूडान, सेनेगल, माली, मलेशिया, वियतनाम, अंगोला और मोजाम्बिक में दौड़ रहे है। अपने देश में भारतीय रेल के लिए मोटिव पावर प्रदाता होने के साथ-साथ डीरेका विभिन्न स्टील प्लांटों, पावर प्लांटों और पोर्ट ट्रस्टों को भी रेल इंजनों की आपूर्ति कर रहा है।

वर्तमान में डीरेका परिसर में 150000 से अधिक छोटे एवं बड़े वृक्ष है, जिससे डीरेका में लगभग 40% क्षेत्र हरा-भरा दृष्टिगोचर होता है। सम्पूर्ण परिसर में प्रतिवर्ष हजारों वृक्षों का रोपण किया जाता है। वर्ष 2018-19 में डीरेका में 5200 से अधिक वृक्ष लगाये गए। 'स्वच्छ डीरेका, हरित डीरेका' हेतु 'टीम डीरेका' के तत्संबंधी प्रयासों के फलस्वरूप यहां का वातावरण चहुंओर न केवल हरा-भरा है, बल्कि जल, वायु, उत्सर्जन एवं हानिकारक कचरे का प्रदूषण स्तर भी सीमा के अंदर है। डीरेका का हरा-भरा परिसर स्वयं ही इस उपनगर के निवासियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डीरेका परिसर में प्रवेश करते ही तापमान में 3-4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट स्पष्टतया महसूस होती है। यह पर्यावरण की समझ और इसके प्रति सम्मान का भाव है, जो डीरेका को हरित, स्वच्छ तथा स्थाई भविष्य के लिए निरंतर प्रोत्साहित करता है।

रश्मि गोयल महाप्रबंधक

Scanned by CamScanner

काशीवार्ता, वाराणसी, पृ०सं० 2
दिनांक: 5-6-19

स्वच्छ डीरेका-हरित डीरेका

स्व. लाल बहादुर शास्त्री द्वारा 3 जनवरी 1964 को डीजल रेल इंजन कारखाना डीरेका निर्मित प्रथम डीजल-विद्युत रेल इंजन को राष्ट्र को समर्पित करने के साथ अपनी शुरूआत करने वाले डीरेका ने वर्तमान में विश्व के अग्रणी डीजल रेल इंजन निर्माताओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। डीरेका इस समय विश्व का दूसरा सबसे बड़ा डीजल विद्युत रेल इंजन निर्माता है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय रेल प्रणालियों द्वारा प्रयोग किये जा रहे मल्टी गेज के रेल इंजन बनाने में सक्षम डीरेका ने एशिया और अफ्रीका में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। डीरेका द्वारा निर्मित रेल इंजन बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, तंजानिया, सूडान, सेनेगल, माली, मलेशिया, वियतनाम, अंगोला और मोजाम्बिक में दौड़ रहे है। अपने देश में भारतीय रेल के लिए मोटिव पावर प्रदाता होने के साथ-साथ डीरेका विभिन्न स्टील प्लांटों, पावर प्लांटों और पोर्ट ट्रस्टों को भी रेल इंजनों की आपूर्ति कर रहा है।

रश्मि गोयल
महाप्रबंधक

डीरेका ने डबल्यूएपी-7 कोटि के विद्युत लोकोमोटिव का उत्पादन प्रारम्भ कर दिया है। लोको संख्या 30509-वरुणा को कोचिंग सेवा के लिए दिनांक 14-02-2017 को निर्गमित कर दिया गया है। वर्ष 2016-17 में डीरेका ने विद्युत रेल इंजन निर्माण की यात्रा शुरू की और तब से पीछे मुड़कर नहीं देखा। कार्बन फुटप्रिंट कम करने एवं पर्यावरण के अनुकूल ट्रेक्शन उपलब्ध कराने की दृष्टि से डीरेका अब भारतीय रेल के लिए डीजल रेल इंजन का निर्माण नहीं करेगा। वित्त वर्ष 2018-19 में 145 विद्युत लोकों का निर्माण सफलतापूर्वक किया गया एवं इन्हें राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया। विश्व इतिहास में पहली बार चार डीजल लोकोमोटिव को उच्च कर्षण शक्ति वाले विद्युत लोकोमोटिव में परिवर्तित कर राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया। इस तरह के पहले ट्विन लोको का लोकार्पण माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के करकमलों द्वारा 19-02-2019 को किया गया। पुरातन शहर वाराणसी में स्थित होने के साथ ही डीरेका इस क्षेत्र की एक अग्रणी औद्योगिक इकाई है, जो अपनी सामुदायिक साझेदारी के साथ-साथ पवित्र गंगा नदी की स्वच्छता के लिए भी जागरूक है। पर्यावरणीय संरक्षण में सदैव अग्रणी डीरेका ने 1980 के दशक से पर्यावरणीय संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण एवं अग्रणी भूमिका का निर्वाह करते हुए मानव जनित मलमूत्र के शोधन के लिए मल-जल शोधन संयंत्र (एस.टी.पी.) ओर संदूषित तथा मिश्रित पेट्रोलियम ऑयल एवं लुब्रिकेट (पी.ओ.एल.) के लिए औद्योगिक निस्राव शोधन संयंत्र (आई.ई.टी.पी.) की स्थापना की है। उक्त संयंत्रों ने गंगा निर्मलीकरण योजना में सहयोग करने के साथ ही संसाधनों की रिसाइक्लिंग में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एस.टी.पी. में प्रतिदिन लगभग 3 मिलियन लीटर जल का शोधन किया जाता है। शोधित जल को कृषि कार्य एवं बागवानी के उपयोग में लाया जाता है। डीरेका को गर्व है कि यहां से किसी भी प्रकार का शोधित अथवा अशोधित मल-जल पवित्र गंगा में नहीं छोड़ा जाता है। इससे जो सूखी पंक प्राप्त होती है, उसका उपयोग उर्वरक के रूप में बागवानी में किया जाता है। एस.टी.पी. और आई.ई.टी.पी. के मानकों की ऑनलाइन निगरानी की जाती है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि ये केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा दिए गए मानकों के अनुरूप रहें।

डीरेका स्वच्छ पर्यावरण के प्रति अपने प्रयासों के लिए कटिबद्ध है। पुनःप्रयोगी जल शोधन संयंत्र लगाकर डीरेका ने एक उल्लेखनीय कार्य किया है। पुनः प्रयोग के लिए प्रतिदिन 0.25 मिलियन लीटर जल शोधन की क्षमता वाली 02 पुनःप्रयोगी जल शोधन संयंत्र लगाने हेतु डीरेका प्रक्रियारत है। डीरेका ऐसी पहली उत्पादन इकाई है जहां ऊर्जा खपत एवं अनुकूल ऊर्जा प्रयोग की निगरानी के लिए स्काडा (एस.सी.ए.डी.ए.) प्रणाली को सामान्य सेवाओं के रूप में स्थापित किया जाता है। उल्लेखनीय है कि डीरेका को उत्कृष्ट ऊर्जा संरक्षण के लिए आई.एस.ओ. 50001 प्रमाणन प्राप्त है। माननीय प्रधानमंत्री का स्वच्छ भारत अभियान वातावरण को प्रदूषण मुक्त बनाए रखने में एक सशक्त माध्यम है। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत डीरेका कर्मशाला, उपनगर, कार्यालयों तथा चिकित्सालयों में सघन स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे है। डीरेका प्रांगण को साफ-सुथरा बनाए रखने के लिए सभी अधिकारियों, कर्मचारियो और उनके परिजनों के साथ-साथ नागरिक सुरक्षा, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स तथा सेंट जॉन्स एम्बुलेंस ब्रिगेड के सदस्य इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। वर्तमान में डीरेका परिसर में 150000 से अधिक छोटे एवं बड़े वृक्ष है, जिससे डीरेका में लगभग 40 फीसदी क्षेत्र हरा-भरा दृष्टिगोचर होता है। सम्पूर्ण परिसर में प्रतिवर्ष हजारों वृक्षों का रोपण किया जाता है। वर्ष 2018-19 में डीरेका में 5200 से अधिक वृक्ष लगाये गए। स्वच्छ डीरेका, हरित डीरेका हेतु टीम डीरेका के तत्संबंधी प्रयासों के फलस्वरूप यहां का वातावरण चहुंओर न केवल हरा-भरा है, बल्कि जल, वायु, उत्सर्जन एवं हानिकारक कचरे का प्रदूषण स्तर भी सीमा के अंदर है। डीरेका का हरा-भरा परिसर स्वयं ही इस उपनगर के निवासियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डीरेका परिसर में प्रवेश करते ही तापमान में 3-4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट स्पष्टतया महसूस होती है। यह पर्यावरण की समझ ओर इसके प्रति सम्मान का भाव है, जो डीरेका को हरित, स्वच्छ तथा स्थाई भविष्य के लिए निरंतर प्रोत्साहित करता है।

Scanned by CamScanner

गोदीप, वाराणसी, पृ०सं० 3
दिनांक: 5-6-19

स्वच्छ डीरेका-हरित डीरेका

स्व.लाल बहादुर शास्त्री पीछे मुड़कर नहीं देखा। भूमिका का निर्वाह करते हुए

द्वारा 3.जनवरी.1964 को डीजल रेल इंजन कारखाना (डीरेका) निर्मित प्रथम डीजल-विद्युत रेल इंजन राष्ट्र को समर्पित करने के साथ अपनी शुरूआत करने वाले डीरेका ने वर्तमान मे विश्व का दूसरा सबसे बड़ा डीजल विद्युत रेल इंजन निर्माता है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय रेल प्रणालियो द्वारा प्रयोग किये जा रहे मल्टी-गेज रेल इंजन बांग्लादेश, श्रीलंका,म्यांमार, तंजानिया, सूडान, माली, मलेशिया, वियतनाम, अंगोला और मोजाम्बिक में दौड़ रहे हैं।अपने देश मे भारतीय रेल के लिए मोटिव पावर प्रदाता होने के साथ-साथ डीरेका विभिन्न स्टील प्लांटो, पावर प्लांटो और पोर्ट ट्रस्टों को भी रेल इंजनो की आपूर्ति कर रहा है। डीरेका ने डब्लयूएपी-कोटि के विद्युत लोकोमोटिव का उत्पादन प्रारम्भ कर दिया है। लोको संख्या 30509-वरूणा, को कोचिंग सेवा के लिए दिनांक 14 फरवरी 2017 को निर्गमित कर दिया गया है। वर्ष 2016-17 में डीरेका ने विद्युत रेल इंजन निर्माण की यात्रा शुरू की और तब से कार्बन फुटप्रिंट कम करने एवं पर्यावरण के अनुकूल ट्रेक्शन उपलब्ध कराने की दृष्टि से डीरेका अब भारतीय रेल के लिए डीजल रेल इंजन का निर्माण नही करेगा।वित्त वर्ष 2018-19 मे 145 विद्युत लोको का निर्माण सफलता पूर्वक किया गया एवं इन्हे राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया। विश्व इतिहास में पहली बार चार डीजल लोकोमोटिव को उच्च कर्षण शक्ति वाले विद्युत लोकोमोटिव में परिवर्तित कर राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया। इस तरह के पहले ट्विन लोको का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के करकमलो द्वारा 19 फरवरी 2019 को किया गया। पुरातन शहर वाराणसी मे स्थित होने के साथ ही डीरेका इस क्षेत्र की एक अग्रणी औद्योगिक इकाई है, जो अपनी सामुदायिक साझेदारी के साथ-साथ पवित्र गंगा नदी की स्वच्छता के लिए भी जागरूक है। पर्यावणीय संरक्षण मे सदैव अग्रणी डीरेका ने 1980के दशक से पर्यावरणीय संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण एवं अग्रणी मानव जाति मलमूत्र के शोधन के लिए मल-जल शोधन संयंत्र (एस. टी.पी.)और संदूषित तथा मिश्रित पेट्रोलियम ऑयल एवं लुब्रिकेंट (पी.ओ.एल) के लिए औद्योगिक निस्राव शोधन संयंत्र (आई.ई.पी.) की स्थापना की है।

मल जल शोधन संयंत्र- उक्त संयंत्रों ने गंगा निर्मलीकरण योजना में सहयोग करने के साथ ही संसाधनों की रिसाइक्लिंग में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एस.टी.पी. में प्रतिदिन लगभग 3 मिलियन लीटर जल का शोधन किया जाता है। शोधित जल को कृषि कार्य एवं बागवानी के उपयोग में लाया गया है। डीरेका को गर्व है कि यहां से किसी भी प्रकार का शोधित अथवा अशोधित मल-जल पवित्र गंगा मे नहीं छोड़ा जाता है। इससे जो सूखी पंक प्राप्त होती है, उसका उपयोग उर्वरक के रूप मे बागवानी में किया जाता है। एस.टी.पी और आई.ई.टी.पी. के मानकों की आनलाइन निगरानी की जाती है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि ये केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा दिए गए मानकों के अनुरूप रहें।यथासंभव यह प्रयास किया जाता है कि जल,वायु, हानिकारक कचरे तथा निकलने वाले धुंए इत्यादि के विभिन्न पैरामीटर निर्धारित मानकों के अनुरूप रहें। डीरेका को वर्ष 2001 में पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली के लिए आई.एस.ओ 14001 प्रमाणन प्राप्त हुआ है। इस प्रमाणन के फलस्वरूप डीरेका को कारखाना एवं उपनगर दोनो स्थानो पर पर्यावरण संरक्षण हेतु सुपरिभाषित एवं लिखित नीति तैयार करने में मदद मिली है। डीरेका स्वच्छ पर्यावरण के प्रति अपने प्रयासो के लिए प्रतिबद्ध है। पुनः प्रयोगी जल शोधन संयंत्र लगाकर डीरेका ने एक उल्लेखनीय कार्य किया है। पुनः प्रयोग के लिए प्रतिदिन 0.25 मिलियन लीटर जल शोधन की क्षमता वाले 2 पुनः प्रयोगी जल शोधन संयंत्र लगाने हेतु डीरेका प्रक्रियारत है पुनः प्रयोगी जल पुनः प्रयोगी जल का उपयोग मानव गतिविधियों के लिए वैकल्पिक जल श्रोत के रूप मे बना रहेगा। प्रचलित एनर्जी ऑडिट, ऊर्जा खपत की जांच एवं विश्लेषण के अतिरिक्त डीरेका में ऊर्जा की खपत को कम करने के दृष्टिकोण से ऊर्जा दक्षता में सुधार हेतु उपायों की भी संस्तुति करेगा।

डीरेका परिसर में चौर ऊर्जा उपकरण- ऊर्जा संरक्षण की दिशा में कदम बढ़ाते हुए, गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों के लाभों को प्राप्त करने हेतु डीरेका ने ग्रिड कनेक्टेड सोलर पॉवर पैनल की स्थापना की तरफ महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। वर्तमान में डीरेका ने विभिन्न स्थानों पर 1.86 मेगावॉट पावर के ग्रिड कनेक्टेड सोलर पॉवर संयंत्र स्थापित किये है।

वर्ष 2017-18 के दौरान 1.86 मेगावॉट स्थापित किया जा चुका है। और वर्तमान वित्तीय वर्ष में 2 मेगावॉट अतिरिक्त क्षमता का संस्थापन प्रक्रियाधीन है। वर्ष 2017-18, तक डीरेका के आवासों एवं सेवा भवनों में 12060 ऊर्जा दक्ष एल.ई.डी.उपकरण लगाए गए हैं।डीरेका ऐसी पहली उत्पादन इकाई है, जहां ऊर्जा खपत एवं अनुकूल ऊर्जा प्रयोग की निगरानी के लिए स्वतंत्र(एस.सी.ए.डी.ए.) प्रणाली को सामान्य सेवाओं के रूप में स्थापित किया गया है। उल्लेखनीय है कि डीरेका को उत्कृष्ट ऊर्जा संरक्षण के लिए आई.एस.ओ. 50001 प्रमाणन प्राप्त है। डीरेकाकर्मियों को अपने आवासो से ऊर्जा दक्ष लाइट लगाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया है।डीरेका भारतीय रेल का पहला संगठन है, जो अपने कर्मचारियों के बीच ऊर्जा दक्ष एल.ई.डी. बल्ब के वितरण में अग्रणी रहा है। डीरेका के 4200 से अधिक कर्मचारियों को 50000 से अधिक 7 वॉट वाले एल.ई.डी.बल्बों का वितरण किया जा चुका है। डीरेका द्वारा किए गए इस कार्य का अनुकरण करते हुए भारतीय रेल की अन्य इकाइयों ने भी इसे अपनाना शुरू किया है।पंप आटोमेशन सहित मोटराइज्ड गेट वाल्व का प्रयोग, डीरेका द्वारा ऊर्जा की खपत में कमी लाने की दिशा में दूसरा कदम है। इस प्रणाली मे सुधार से न केवल बहुमूल्य जल की बचत हुई, बल्कि पंपिंग के समय में भी दो घंटे की कमी आई है।विभिन्न उपायों से डीरेका विगत वर्षों मे जल की खपत को कम करने मे सफल रहा और वर्तमान समय मे डीरेका मे जल की खपत लगभग 12 मिलीयन लीटर प्रतिदिन है। जल को एक मूल्यवान स्रोत मानते हुए एस.टी.पी. से शोधित जल को उद्यानों,क्रीडांगनो, हरित स्थलों की सिंचाई एवं जलीय स्थलों को भरने के काम में लिया जाता है।डीरेका भूमिगत जल की निकासी करने हेतु 425 मीटर और 47 डीप निकासी वेल के निर्माण के साथ वाटर हार्वेस्टिंग के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री का स्वच्छ भारत अभियान वातावरण को प्रदूषण मुक्त बनाए रखने में एक सशक्त माध्यम है। स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत डीरेका कर्मचारी, ठेकेदार, कामगारों तथा विक्रेताओं में सघन स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं।डीरेका प्रांगण को साफ सुथरा बनाए रखने के लिए सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिजनों के साथ-साथ नागरिक सुरक्षा, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स तथा रोट जीन्स एक्सप्लोरेस क्लिपेड के सदस्य इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।डीरेका सौर की बिजली से अपनी रेल है। वर्ष 2018-19 के दौरान लगभग 10.91 करोड़ की सौर बिजली का रिकार्ड दर्ज किया गया जो स्वच्छता सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। डीरेका अपने रेल इंजनों में भी हरित ऊर्जा का प्रयोग कर रहा है। ऑक्जिलरी पॉवर यूनिट (ए.पी.यू.) एवं होटल लोड परीक्षण से डीजल की खपत को कम किया है, फलस्वरूप मौजूदा उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आई है।इलेक्ट्रानिक फ्यूल इंजेक्शन सिस्टम के प्रयोग से भी डीजल रेल इंजनों का उत्सर्जन कम होगा और इसके द्वारा कार्बन फुट प्रिंट में कमी आएगी।वर्तमान में डीरेका परिसर में 150000 से अधिक छोटे एवं बड़े वृक्ष हैं,जिससे डीरेका में लगभग 40प्रतिशत हरा भरा वृक्ष गोचर होता है। सम्पूर्ण परिसर में प्रतिवर्ष हजारों वृक्षों का रोपण किया जाता है। वर्ष 2018-19 में डीरेका में 5200 से अधिक वृक्ष लगाये गए। स्वच्छ डीरेका,हरित डीरेका हेतु टीम डीरेका के कर्मचारी प्रयासों के फलस्वरूप यहां का वातावरण सुहावना न केवल हरा भरा है, बल्कि जल, वायु, ध्वनि एवं हानिकारक कचरे का प्रदूषण स्तर भी सीमा के अंदर है।

डीरेका का हरा भरा परिसर स्वयं ही इस इकाई के निवासियों की पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डीरेका परिसर में प्रवेश करते ही तापमान में 3-4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट स्पष्टतया महसूस होती है। यह पर्यावरण की समझ और इसके प्रति सम्मान का भाव है, जो डीरेका को हरित, स्वच्छ तथा स्वाई भविष्य के लिए निरंतर प्रोत्साहित करता है।

डीरेका की इकाइयों में एक और महत्वपूर्ण कड़ी उस समय जुड़ गई, जब सी.आई.आई गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर(सी आई आई - गोदरेज जी बी सी.) ने डीरेका को पर्यावरण संरक्षण के लिए ग्रीन को सिल्वर का दर्जा प्रदान किया। उपर्युक्त तथ्यों से विदित है कि डीरेका स्वच्छ, हरित एवं सतत पर्यावरण के प्रति समर्पित है।

रश्मि गोयल
महाप्रबंधक

Scanned by CamScanner

The Pioneer, Lucknow, P. No. 4
Dt. 5-6-19

DLW among leading diesel loco manufacturers in world

VARANASI: Started with a modest beginning, when Late Lal Bahadur Shashtri dedicated to the nation the first diesel-electric locomotive manufactured by Diesel Locomotive Works (DLW) on January 3, 1964, DLW has now taken its rightful place among the leading diesel locomotive manufacturers of the world. DLW was the second largest manufacturer of diesel-electric locomotives in the world. With a capability to design across the multiple gauges used by various international railway systems, DLW has a footprint across Asia and Africa. Locomotives manufactured by DLW are running in Bangladesh, Sri Lanka, Myanmar, Tanzania, Sudan, Senegal, Mali, Malaysia, Vietnam, Angola and Mozambique. Within our own country, besides being the Motive Power provider for Indian Railways, DLW is also supplying locomotives to various steel plants, power plants and port trusts.

Rashmi Goel, DLW General Manager

DLW has started manufacturing WAP7 class electric locomotives, 30509 named 'Varun' was dispatched for coaching services on 14/02/17. Since the year 2016-17, DLW has embarked on a journey to manufacture electric locomotives and has not looked back ever since. In a bid to reduce the carbon footprint and provide green traction, no more diesel locomotives would be manufactured in DLW for Indian Railways.

During the year 2018-19, 145 electric locomotives were successfully manufactured and dedicated to the nation. For the first time in world history, four diesel locomotives have been converted into electric locomotives with increased traction power and dedicated to the nation.

The first such twin loco was inaugurated by the Prime Minister Narendra Modi on 19.02.2019.

DLW being located in the heritage town of Varanasi is the leading industrial unit in this area and has always been conscious of its larger role with regard to its community stake holders especially towards the holy river Ganga. Always being a leader in environmental protection, DLW took the lead way back in late 1980s and installed two treatment plants viz. sewage treatment plant (STP) for treatment of discharged human waste and industrial effluent treatment plant (IETP) for treating contaminated & mixed petroleum oil and lubricants (POL).

These plants, besides ensuring that river Ganga remains clean, also contribute significantly to the recycling of resources. At STP 3.6 million litres of water is being recycled every day. The treated water is released for agricultural and gardening purposes. DLW takes pride in the fact that sewage, whether treated or untreated, is discharged into the river Ganga.

Scanned by CamScanner